• वर्ष : 1 • अङ्क : 1 • मई-जुलाई 2016 • ISSN : 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

आगामी अंक
20 अक्टूबर, 2016

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, नजफगढ़, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110005 द्वारा मुद्रित। **सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान**

दूरभाष संख्या-09555222747, 09266319639

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख **हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'वाक् सुधा'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की उद्भावना स्पष्टत: नहीं है। अत: इसके लिए शोध-लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* **आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ लेख 30 सितम्बर, 2016 तक अवश्य प्रेषित कीजिए। यदि आप लेख टाइप करा कर भेजने में असमर्थ हैं तो हस्तलिखित प्रति पत्रिका में दिये गये पत्र-व्यवहार के पते पर भेज दें।**
* वर्ष के अंतिम अङ्क के प्रकाशन से पूर्व प्रथम अङ्क पत्रिका की वेबसाइट पर अध्ययन हेतु उपलब्ध हो जाएगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ISSN : 2347-6605

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	– ₹200	संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)	– ₹1500
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	– ₹400	पञ्च वार्षिक शुल्क	– ₹6000
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क	– ₹800	आजीवन सदस्यता शुल्क	– ₹15000
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत (वार्षिक)	– ₹1200		

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

सलाहकार परिषद् :

- **प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय**
  (पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)
- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**
  (पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
- **प्रो. शंकर दयाल द्विवेदी**
  (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राम सरेख सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. पवन अग्रवाल**
  (हिन्दी एवं आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**
  (अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)
- **प्रो. आभा त्रिवेदी**
  (पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राम भरत सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर**
  (राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी एवं प्रसिद्ध दलित चिंतक)
- **डॉ. विक्रमादित्य राय**
  (अध्यक्ष, समाज-शास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, (बी.एच.यू.) वाराणसी
- **डॉ. इन्द्र नारायण सिंह**
  (बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राजेश रंजन**
  (पालि विभाग, नालन्दा नव-महाविहार)
- **डॉ. पतञ्जलि कुमार भाटिया**
  (संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. सत्यदेव पोद्दार**
  (इतिहास विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. काशीनाथ जेना**
  (राजनीति-शास्त्र विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. शाहिद तस्लीम**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली)
- **डॉ. कामाख्या नारायण तिवारी**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. कृष्ण लाल**
  (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अरविन्दो कॉलेज (प्रात:), दिल्ली)
- **डॉ. रसाल सिंह**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली)
- **डॉ. शंकर नाथ तिवारी**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **डॉ. मनोज कुमार सिन्हा**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)
- **लाजपत राय**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, सत्यवती महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)
- **डॉ. चंद्रशेखर पासवान**
  (बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा)
- **उमेश कुमार**
  (इतिहास विभाग, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

सम्पादक :
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
मो. 9555222747, 9266319639

सहायक सम्पादक :
डॉ. राजेश कुमार
मो. 9555666907, 8527907638

उप-सम्पादक :
डॉ. राम किशोर यादव
मो. 9871600448

विधिक सलाहकार :
अरुण कुमार शुक्ला

तकनीकी सलाहकार :
स्मित मनहर *(बी.टेक.)*

मैनेजिंग डायरेक्टर
ठाकुर प्रसाद चौबे
मो. 9810636082

ग्राफिक डिजाइनर :
कवल मलिक
जे.डी. कंप्यूटर्स, मो. 9818455819

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'वाक् सुधा'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 6

Women empowerment and the role of the press...7
Babita Verma

अटठ्महाठानानि 10
दिग्विजय दिवाकर

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ : एक विवेचन 14
हरीश कुमार

उपनिषदों की इयत्ता 19
भगतसिंह आर्य

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म 25
जगनारायण मिश्र

पाणिनि : एक अद्वितीय भाषाशास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक 30
डॉ. अंजू सेठ

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण विज्ञान : आधुनिक परिप्रेक्ष्य... 34
डॉ. दया शंकर तिवारी

डॉ० श्री कृष्ण सिंह और बिहार में जमींदारी उन्मूलन की सार्थकता......................... 37
डॉ० नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

A study of Relationship between Emotional maturity and Academic Performance among college students.............43
Suman Rani

A Study Of Relationship Between Cognitive Style And Academic Achievement Of Secondary School Students In Haryana 51
Savitri Devi

कैसे जाने कुंडली निर्माण का सही समय जिससे सटीक हो आपका फलादेश? 55
डॉ. राज कुमार द्विवेदी

'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' का भावातिदेश और अभावातिदेश के संदर्भ में विश्लेषण 57
हरीश कुमार

चार्टिस्ट आंदोलन.. 62
संजय कुमार

भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व की संकल्पना ... 66
कल्पेश्वर बहुगुणा

सामंतवाद 70
संजय कुमार

आधुनिक काल में श्रीगोस्वामितुलसीदासचरितम् की प्रासंगिकता 72
रीना रानी शर्मा

श्रीमद्भगवद्गीता में मरणोपरान्त जीवन 74
डा. विमलेश कुमार ठाकुर

हिन्दी उपन्यासों में भाषागत् यथार्थ...................... 76
डॉ अवधेश तिवारी

तिलक और उनके समकालिक : गोपाल कृष्ण गोखले एवं महात्मा गाँधी 78
डॉ. रेखा रानी

पद्मपुराण के अनुसार सृष्टि तत्व एवं प्रलय तत्व 85
डॉ. आनन्द कुमार

ई-प्रशासन : संस्कृत भाषा का अनुप्रयोग 91
रामकरण लुहार

संस्कृत भाषा और आज 93
डॉ. उमा रानी

महाकवि कालिदास के विवाह सम्बन्धी विचार .. 95
अमोघ पाठक

आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र और आचार्य भामह के काव्यालंकार का तुलनात्मक अध्ययन 98
विनय कुमार गुप्ता

केशव की काव्यभाषा में अभिव्यक्त लोक संस्कृति... 103
डा. कृष्ण मोहन

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वाल्मीकि रामायण की प्रासंगिकता 115
डॉ. शंकरनाथ तिवारी

बन्धन से मोक्ष यात्रा : जैन दर्शन के सन्दर्भ में.................................... 120
शालिनी मिगलानी

Refereed Journal • ISSN : 2347-6605

वैदिक चिन्तन में नैतिक मूल्य 125
अरुणा चौधरी
व्याकरण-दर्शन में शब्दार्थ-मीमांसा 128
डॉ. रणजीत कुमार मिश्र
वेणीसंहारे अलंकारयोजना 144
वन्दना कुमारी
हिन्दी उपन्यासों की विकास यात्रा में आध्यात्मिकता का प्रवेश 147
रेनू चौधरी
तुलसी के परवर्ती काव्य में राम-भक्ति 153
डॉ. कुमारी अनीता
श्रीभार्गवराघवीयम् का समीक्षात्मक परिशीलन 156
परमानन्द पाण्डेय
उर्दू साहित्य पर हिन्दी भाषा का प्रभाव 160
आलिया
प्रत्यभिज्ञादर्शनविमर्शः 163
डॉ. शिवशंकरमिश्रः
श्री लाल शुक्ल का उपन्यासेतर साहित्य : एक समाजशास्त्र विश्लेषण 166
अनुज रावत
मुक्तिबोध की सामाजिक एवं आर्थिक चेतना 174
शैलेन्द्र कुमार
केशव के काव्य में अभिव्यक्त धार्मिक भावनाएँ और लोक संस्कृति 177
डा. कृष्ण मोहन
The Evolutionary Aspects of Panchtantra... 183
Thuktan Negi
यवनों की भारतीय संस्कृति को देन 188
अनु कुमारी
राष्ट्रवाद 195
डॉ. सत्यकाम शर्मा
शमशेर की कविताई 200
स्वाति सिंह
चण्डकौशिके हरिश्चन्द्रस्य सत्यपरिपालनम् 205
डॉ. सुमन लाल राय
History Curriculum of CBSE, CISCE and IB: A Comparative Study -------------------------- 207
Ashish Ranjan
Kul Devi Tradition and Political Formation in Rajasthan ----------------------- 223
Dr. Hemant Kumar Mishra
डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक एवं धार्मिक चिन्तन 234
गीतांजली कुमार
The New Face of The Feminist Protest in Punjab and Haryana --------------------------- 237
Dr. Pratibha
National Food Security Act: India's bold attempt to feed its 1.3 billion population. Challenges and consequences -------------- 245
Dr. Pooja Paswan
इस्लाम में औलिया का महत्त्व : दारा शुकूह का दृष्टिकोण 255
डॉ. मृदुला झा
हिन्दी दलित कहानी में युद्धरत आम आदमी : एक पड़ताल 258
डॉ. अश्वनी कुमार

सम्पादकीय

वाक् सुधा का नया अंक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। नया साल, नए तेवर, नई चुनौतियां इस अंक की विशेषता है। नए कलेवर और तेवर के साथ वाक् सुधा में जो बदलाव और परिवर्तन देख रहे हैं वह वास्तव में प्राकृतिक विकासक्रम है। वाक् सुधा ने कभी भी स्वास्थ्य और नवाचारी विचारों से परहेज नहीं किया।

युवा शोधार्थियों और अहिन्दी भाषी शोधार्थियों के विशेष आग्रह पर इस अंक के साथ अंग्रेजी भाषा में भी शोध पत्र को प्रकाशित किया गया है। वाक् सुधा अपने तीन साल के यात्रा के दौरान दिल्ली से दक्षिण कोरिया तक भी पहुँची। समय की मांग और जरूरतों के अनुसार अकादमिक बदलाव व जन आकांक्षा के अनुरूप इसके तेवर और कलेवर में बदलाव आता रहा है। त्रैमासिक स्वरूप तो यथावत रहा लेकिन कई बार आकार में बदलाव आता रहा।

कई बार प्रकाशित होने में अर्थाभाव के कारण जरूर देरी हुई, लेकिन जिस, साहस, संकल्प और निर्भयता के साथ वाक् सुधा ने यात्रा शुरू की थी वह समय के साथ और मुखर हुई। जनविरोधी शक्तियों और अकादमिक जगत् के मठाधिशों से भी वाक् सुधा की खूब आलोचना झेलनी पड़ी। बिना डर, भय और प्रलोभन के वाक् सुधा अकादमिक, सांस्कृतिक और नैतिक कायाकल्प की महत्वाकांक्षा को लेकर दलित, पिछड़े, वंचितों के साथ खड़ा रहा है और आगे की भी संरक्षणवादी सोच से किनारा करते हुए इव वर्गो की पैरोकारी करती रहेगी।

वाक् सुधा में सबको जोड़ने वाला संतुलनकारी गुण है जो वाक् सुधा की विशिष्टता है। यही कारण है कि एक बार वाक् सुधा का पाठक होने पर सदा के लिए उसका होकर रह जाता है। एक प्रसिद्ध थीम सांग है 'मेरा देश बदल रहा है, आगे बढ़ रहा है।' उसी की तर्ज पर वाक् सुधा के बारे में कहा जा सकता है कि थोड़ा-थोड़ा ही सही, धीरे-धीरे ही सही वाक् सुधा बदल रहा है और निरन्तर आगे ही आगे बढ़ रहा है।

शब्द ब्रह्म है। शब्द में अद्‌भुत शक्ति समायी है। एक-एक शब्द और उसको जोड़ने से वाक्य बनता है, जिससे विचारों की अभिव्यक्ति संभव हो पाती है। यह पाठक पर निर्भर करता है कि शब्दों से सकारात्मक विचारों का सृजन करते हैं या फिर नकारात्मक। वाक् सुधा हमेशा सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रहा है, जिससे उसका व्यापक प्रभाव बौद्धिक जगत् पर पड़ता दिखाई दे रहा है। देश के बौद्धिक व सांस्कृतिक विमर्श में वाक् सुधा ने हस्तक्षेप किया है। जेएनयू से लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय तक दिल्ली विश्वविद्यालय से लेकर त्रिपुरा विश्वविद्यालय तक हर जगह इसने अपना एक सम्मानजनक स्थान बनाया है।

शोधपरक लेख और संसाधनों एवं आर्थिक सहयोग तक के लिए जन सहयोग पर अवलम्बित होकर वाक् सुधा ने अकादमिक जगत् के तथा समाज के उन तबकों की आवाज को बुलंद किया है, जिसकी आवाज मुख्यधारा की शोध पत्रिका में दरकिनार कर दी जाती है।

मुख्यधारा की स्थापित शोध पत्रिका की विश्वसनीयता संदिग्ध होती जा रही है जन सरोकारों के लिए उसमें कोई जगह नहीं है, क्योंकि उस पर विचारधारा, पंथ, संप्रदाय, पूंजी और बाजार के बहुआयामी दबाव हैं। इसके विपरीत समाज की बेहतरी के लिए सक्रिय लोगों का सहयोग ही वाक् सुधा की ताकत है।

इस अवसर पर अपने सलाहकार परिषद और सम्पादक मंडल के सभी ख्यातिप्राप्त विद्वानों का आभार व्यक्त करता हूँ जिसके सतत् मार्गदर्शन के कारण वाक् सुधा ने यह मुकाम हासिल किया है।

अंत में वाक् सुधा की पूरी टीम और सहयोगी भी बधाई के पात्र हैं जिनके अहर्निश समर्पण के बिना इसका नियमित प्रकाशन संभव नहीं हो पाता।

- डॉ. रूपेश कुमार चौहान